International Research Journal of Management Science & Technology



ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन का भारतीय राजनीतिक चेतना पर प्रभाव: एक राजनीतिक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन तथा भारतीय राजनीतिक चेतना के विकास पर उसके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। उन्नीसवीं शताब्दी में औपनिवेशिक शासन, सामाजिक कुरीतियों, जातिगत भेदभाव और धार्मिक रूढ़ियों से प्रभावित भारतीय समाज में दयानन्द सरस्वती ने वैदिक विचारों की पुनर्व्याख्या, सामाजिक समानता, शिक्षा और आत्मसम्मान पर बल दिया। वर्ष 1875 में स्थापित आर्य समाज ने इन विचारों को संगठित सामाजिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि धार्मिक सुधार की यह प्रक्रिया किस प्रकार सामाजिक जागरण, स्वदेशी भावना, राष्ट्रीय आत्मविश्वास तथा औपनिवेशिक सत्ता के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण के विकास से जुड़ी। साथ ही, आर्य समाज की शैक्षिक गतिविधियों, स्त्री-शिक्षा, जातिगत असमानताओं के विरोध और राष्ट्रीय आंदोलन से उसके संबंधों का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि दयानन्द सरस्वती का योगदान आधुनिक भारतीय राजनीतिक चेतना के सामाजिक एवं वैचारिक आधारों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण था, यद्यपि उनके विचारों और आर्य समाज की बाद की गतिविधियों के प्रभावों में अंतर करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: स्वामी दयानन्द सरस्वती, आर्य समाज, सामाजिक सुधार, धार्मिक पुनर्जागरण, राजनीतिक चेतना, राष्ट्रवाद, स्वराज, औपनिवेशिक शासन।

प्रस्तावना

19वीं शताब्दी का भारतीय समाज सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर व्यापक परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा था। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विस्तार ने भारतीय समाज की परंपरागत संस्थाओं, प्रशासनिक व्यवस्था, आर्थिक संरचना और सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत एक ओर आधुनिक शिक्षा, मुद्रण, संचार और नए बौद्धिक विचारों का प्रसार हो रहा था, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज अपनी अनेक आंतरिक समस्याओं से भी जूझ रहा था। जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, स्त्रियों की सीमित शैक्षिक भागीदारी, बाल-विवाह, विधवाओं की दयनीय स्थिति तथा धार्मिक रूढ़ियों जैसी समस्याओं ने सामाजिक विकास की संभावनाओं को सीमित कर रखा था। इन परिस्थितियों में भारतीय समाज के भीतर विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलनों का उदय हुआ, जिन्होंने प्रचलित मान्यताओं की समीक्षा करते हुए समाज के पुनर्गठन, शिक्षा के विस्तार और मानवीय गरिमा की स्थापना पर बल दिया। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे विचारकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से भारतीय समाज में सुधार और नवजागरण की

प्रक्रिया को गति प्रदान की। इनमें स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्थान विशेष महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने धार्मिक पुनर्व्याख्या को सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक आत्मसम्मान और राष्ट्रीय चेतना के विकास से जोड़ने का प्रयास किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म 1824 में गुजरात के टंकारा में हुआ था। उनका मूल नाम मूलशंकर था। प्रारंभिक जीवन में धार्मिक परंपराओं और कर्मकांडों से परिचित होने के बाद उन्होंने प्रचलित धार्मिक मान्यताओं के औचित्य पर प्रश्न उठाए। सत्य की खोज, तर्कशीलता और वैदिक ज्ञान के अध्ययन ने उनके चिंतन को एक विशिष्ट दिशा प्रदान की। उन्होंने भारतीय समाज में प्रचलित धार्मिक रूढ़ियों को धर्म का अनिवार्य स्वरूप मानने के बजाय उनकी विवेकपूर्ण समीक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। उनके विचारों का केंद्रीय आधार यह था कि समाज की उन्नति के लिए धार्मिक जीवन को नैतिकता, ज्ञान और सत्य के अनुरूप बनाया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण ने उन्हें केवल धार्मिक उपदेशक के रूप में सीमित नहीं रखा, बल्कि सामाजिक व्यवस्था और सार्वजनिक जीवन के प्रश्नों पर विचार करने वाले सुधारक के रूप में भी स्थापित किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधारा का प्रमुख आधार वेदों की सर्वोच्चता और उनकी तार्किक पुनर्व्याख्या थी। उनका मानना था कि सत्य को स्वीकार करना तथा असत्य का परित्याग करना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। उन्होंने मूर्तिपूजा, अंधविश्वास, निरर्थक कर्मकांड और पुरोहितवादी वर्चस्व की आलोचना की। उनके अनुसार, धर्म का उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक, विवेकशील और उत्तरदायी बनाना होना चाहिए, न कि उसे रूढ़ियों तथा अज्ञान के बंधनों में बाँधना। उनकी प्रमुख कृति सत्यार्थ प्रकाश में धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक प्रथाओं, शिक्षा, नैतिकता और शासन से संबंधित विचारों का विस्तृत विवेचन मिलता है। इस ग्रंथ में उन्होंने विभिन्न धार्मिक मान्यताओं की समीक्षा करते हुए वैदिक सिद्धांतों के आधार पर सामाजिक एवं धार्मिक पुनर्निर्माण का समर्थन किया। उनकी दृष्टि में किसी समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है, जब उसके सदस्य ज्ञान प्राप्त करने, तर्क करने और सत्य की खोज करने के लिए स्वतंत्र हों। इस प्रकार उनके धार्मिक चिंतन में सुधार, विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व के तत्त्व प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं।

दयानन्द सरस्वती के सामाजिक विचारों का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने धार्मिक सुधार को सामाजिक असमानताओं के प्रश्नों से अलग नहीं माना। उन्होंने जन्म के आधार पर व्यक्ति की श्रेष्ठता निर्धारित करने वाली मान्यताओं की आलोचना की तथा गुण, कर्म और योग्यता को महत्त्व देने पर बल दिया। उन्होंने शिक्षा के प्रसार, स्त्रियों की स्थिति में सुधार और सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का समर्थन किया। बाल-विवाह जैसी प्रथाओं के प्रति उनकी आलोचनात्मक दृष्टि तथा स्त्री-शिक्षा के समर्थन ने तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेक मान्यताओं को चुनौती दी। हालांकि, उनके वर्ण संबंधी विचारों को आधुनिक जाति-विरोधी समानता की अवधारणा के पूर्णतः समान नहीं माना जा सकता, फिर भी उन्होंने जन्म-आधारित विशेषाधिकारों के औचित्य पर प्रश्न उठाने और सामाजिक सुधार की आवश्यकता को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दृष्टि से उनका आंदोलन भारतीय समाज में समानता, शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित विमर्श के विकास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी था।

वर्ष 1875 में बंबई में आर्य समाज की स्थापना ने दयानन्द सरस्वती के विचारों को संगठित सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। आर्य समाज ने वैदिक सिद्धांतों के प्रचार के साथ शिक्षा, सामाजिक सुधार, नैतिक जीवन और धार्मिक रूढ़ियों की आलोचना को अपने कार्यक्रमों का हिस्सा बनाया। संगठन के माध्यम से दयानन्द के विचार व्यक्तिगत उपदेशों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि सामाजिक संस्थाओं, सार्वजनिक सभाओं, शैक्षिक गतिविधियों और वैचारिक साहित्य के माध्यम से व्यापक समाज तक पहुँचे। दयानन्द की मृत्यु के बाद भी आर्य समाज की गतिविधियाँ विभिन्न क्षेत्रों में जारी रहीं। विशेष रूप से पंजाब और उत्तर भारत के अन्य भागों में आर्य समाज से जुड़े संगठनों ने शिक्षा के प्रसार, सामाजिक जागरण और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी को बढ़ावा दिया। आगे चलकर

दयानन्द एंग्लो-वैदिक संस्थाओं तथा गुरुकुल परंपरा से जुड़े शैक्षिक प्रयासों ने भारतीय शिक्षा के स्वरूप पर भी प्रभाव डाला। इन संस्थाओं में आधुनिक ज्ञान और भारतीय परंपरा के बीच संबंध स्थापित करने के विभिन्न प्रयास किए गए। इस प्रकार आर्य समाज ने सामाजिक सुधार के विचारों को संस्थागत निरंतरता प्रदान की।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष भारतीय सांस्कृतिक आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का प्रयास था। औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय समाज की परंपराओं और ज्ञान-व्यवस्था के संबंध में विभिन्न प्रकार की आलोचनाएँ प्रचलित थीं। ऐसी परिस्थितियों में दयानन्द ने भारतीय वैदिक परंपरा की बौद्धिक क्षमता और नैतिक महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने भारतीय समाज को अपनी सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन करने तथा उसमें निहित उपयोगी विचारों को पहचानने के लिए प्रेरित किया। उनके दृष्टिकोण में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अर्थ केवल अतीत का गौरवगान करना नहीं था, बल्कि सामाजिक कमजोरियों को दूर करके समाज को अधिक सक्षम बनाना भी था। इस विचारधारा ने भारतीयों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की भावना को प्रोत्साहित किया। हालांकि, उनके वैदिक पुनरुत्थानवादी दृष्टिकोण की अपनी सीमाएँ भी थीं, क्योंकि भारतीय समाज की विविध धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को एक समान वैदिक आधार पर समझना सभी समुदायों के अनुभवों को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता था। इसलिए उनके सांस्कृतिक योगदान का मूल्यांकन उपलब्धियों और सीमाओं दोनों को ध्यान में रखकर किया जाना आवश्यक है।

दयानन्द सरस्वती के विचारों का महत्त्व इस बात में निहित है कि उन्होंने सामाजिक सुधार और राजनीतिक चेतना के बीच संबंध स्थापित करने में योगदान दिया। राजनीतिक चेतना का विकास केवल राजनीतिक दलों, आंदोलनों या शासन-संबंधी संस्थाओं के माध्यम से नहीं होता, बल्कि इसके लिए समाज में शिक्षा, समानता, अधिकार-बोध, सामूहिक उत्तरदायित्व और सार्वजनिक सहभागिता की भावना का विकसित होना भी आवश्यक है। दयानन्द के विचारों ने इन सामाजिक आधारों को मजबूत करने की दिशा में योगदान दिया। जब व्यक्ति जन्म-आधारित श्रेष्ठता, धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक अन्याय पर प्रश्न उठाता है, तब वह व्यापक सामाजिक व्यवस्था तथा सत्ता-संबंधों की समीक्षा करने की क्षमता भी विकसित कर सकता है। इस दृष्टि से दयानन्द का सुधार आंदोलन भारतीय समाज में आलोचनात्मक चिंतन और सामाजिक उत्तरदायित्व के विस्तार के लिए महत्त्वपूर्ण था। फिर भी, उनके सामाजिक विचारों को सीधे आधुनिक लोकतांत्रिक अधिकारों अथवा समकालीन राजनीतिक समानता के सिद्धांतों के समान मानना ऐतिहासिक दृष्टि से उचित नहीं होगा। उनके योगदान को उन्नीसवीं शताब्दी की सामाजिक परिस्थितियों तथा आगे विकसित हुए राजनीतिक आंदोलनों के संदर्भ में समझना अधिक उपयुक्त है।

दयानन्द सरस्वती के विचारों और स्वराज की अवधारणा के बीच संबंध भी अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने स्वदेशी, स्वशासन और राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता से संबंधित विचारों को प्रोत्साहित किया। उनके चिंतन में शासन का औचित्य न्याय, नैतिकता और जनकल्याण से जुड़ा हुआ था। उनके विचारों से प्रेरित सामाजिक संगठनों ने शिक्षा, संगठन और सार्वजनिक गतिविधियों के माध्यम से ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कीं, जिनमें औपनिवेशिक शासन की नीतियों पर प्रश्न उठाने और राष्ट्रीय हितों के प्रति जागरूकता विकसित करने की संभावनाएँ बढ़ीं। आगे चलकर आर्य समाज से जुड़े कुछ नेताओं, विशेषकर लाला लाजपत राय, ने राष्ट्रीय आंदोलन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि दयानन्द के आंदोलन का प्रभाव केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उससे जुड़ी संस्थाओं और कार्यकर्ताओं ने सार्वजनिक तथा राजनीतिक जीवन में भी योगदान दिया। हालांकि, भारतीय राष्ट्रवाद का विकास अनेक विचारधाराओं, आर्थिक परिस्थितियों और राजनीतिक आंदोलनों के संयुक्त प्रभाव से हुआ था; इसलिए उसके विकास का पूरा श्रेय किसी एक सुधारक या संगठन को देना उचित नहीं होगा।

दयानन्द सरस्वती के सुधार आंदोलन का आलोचनात्मक अध्ययन करते समय उसकी अंतर्निहित सीमाओं और विरोधाभासों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। आर्य समाज ने शिक्षा, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के विस्तार में योगदान दिया, किंतु उसकी कुछ गतिविधियों में धार्मिक पहचान को विशेष महत्त्व दिए जाने से विभिन्न समुदायों के बीच वैचारिक प्रतिस्पर्धा भी उत्पन्न हुई। कुछ ऐतिहासिक परिस्थितियों में धार्मिक पुनरुत्थान की प्रवृत्तियों ने सामुदायिक संबंधों को जटिल बनाया। इसी प्रकार दयानन्द के मूल विचारों और उनके बाद आर्य समाज से जुड़े विभिन्न संगठनों की गतिविधियों में पूर्ण समानता मानना भी उचित नहीं है। किसी संस्थापक के विचारों का ऐतिहासिक प्रभाव समय के साथ सामाजिक परिस्थितियों, संगठनात्मक निर्णयों और राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार बदल सकता है। अतः दयानन्द के आंदोलन का संतुलित मूल्यांकन करते हुए उसके सामाजिक सुधारवादी पक्ष, राष्ट्रवादी प्रभाव और धार्मिक पुनरुत्थान से जुड़े अंतर्विरोधों का पृथक-पृथक परीक्षण करना आवश्यक है।

उपर्युक्त ऐतिहासिक एवं वैचारिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन का भारतीय राजनीतिक चेतना पर पड़े प्रभाव का व्यवस्थित विश्लेषण करना है। अध्ययन में उनके धार्मिक विचारों, सामाजिक सुधार संबंधी दृष्टिकोण, शिक्षा के प्रसार, सांस्कृतिक आत्मसम्मान, स्वदेशी एवं स्वशासन की भावना तथा आर्य समाज की संस्थागत गतिविधियों का परीक्षण किया गया है। इसके साथ ही, दयानन्द के विचारों और भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के बीच संबंधों को ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में यह भी विचार किया गया है कि सामाजिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय राजनीतिक चेतना के निर्माण में किस प्रकार अप्रत्यक्ष भूमिका निभाई तथा उनकी वैचारिक सीमाओं ने सामाजिक और सामुदायिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती का आंदोलन भारतीय इतिहास में धार्मिक पुनर्व्याख्या, सामाजिक पुनर्निर्माण और राजनीतिक जागरण के परस्पर संबंधों को समझने का एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है। उनके विचारों ने भारतीय समाज को अपनी परंपराओं की समीक्षा करने, शिक्षा और सामाजिक सुधार को महत्त्व देने तथा राष्ट्रीय आत्मसम्मान की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया। यद्यपि उनके आंदोलन को आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का एकमात्र आधार नहीं माना जा सकता, फिर भी सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय जागरण के विकास में उसका योगदान उल्लेखनीय रहा। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी व्यापक दृष्टिकोण के आधार पर दयानन्द सरस्वती के आंदोलन की ऐतिहासिक भूमिका, राजनीतिक प्रभाव, उपलब्धियों और सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है।

शोध समस्या एवं अध्ययन का महत्त्व

स्वामी दयानन्द सरस्वती के योगदान का मूल्यांकन प्रायः धार्मिक सुधार और आर्य समाज के विस्तार तक सीमित रह जाता है, जबकि उनके विचारों तथा सामाजिक गतिविधियों के भारतीय राजनीतिक चेतना पर पड़े प्रभाव का स्वतंत्र विश्लेषण भी आवश्यक है। प्रमुख शोध समस्या यह है कि धार्मिक पुनर्जागरण, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय आत्मसम्मान की उनकी अवधारणाओं ने औपनिवेशिक भारत में राजनीतिक जागरण के लिए किस प्रकार वैचारिक एवं सामाजिक आधार तैयार किया। इस अध्ययन का महत्त्व इस बात में है कि यह भारतीय राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक संगठनों और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध आंदोलनों के परिणाम के रूप में न देखकर उसके सामाजिक, धार्मिक और बौद्धिक आधारों का भी विश्लेषण करता है। इससे आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारों के विकास में सुधार आंदोलनों की भूमिका तथा उनकी सीमाओं को समझने में सहायता मिलती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं धार्मिक सुधार संबंधी विचारों का विश्लेषण करना।

2. आर्य समाज की गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक जागरण, शिक्षा और राष्ट्रीय आत्मसम्मान के विकास का अध्ययन करना।
3. दयानन्द के विचारों तथा भारतीय राजनीतिक चेतना और राष्ट्रवादी आंदोलन के बीच संबंधों का मूल्यांकन करना।
4. उनके सुधार आंदोलन की उपलब्धियों, सीमाओं और समकालीन राजनीतिक महत्त्व का आलोचनात्मक परीक्षण करना।

शोध प्रश्न

1. दयानन्द सरस्वती के धार्मिक एवं सामाजिक विचारों ने भारतीय समाज की राजनीतिक चेतना को किस प्रकार प्रभावित किया?
2. आर्य समाज ने शिक्षा, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय जागरण के माध्यम से राजनीतिक चेतना के विकास में क्या योगदान दिया?
3. दयानन्द के आंदोलन की वैचारिक सीमाएँ और भारतीय राष्ट्रवाद पर उसके प्रभाव की प्रकृति क्या थी?

प्राक्कल्पनाएँ

1. दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं धार्मिक सुधार विचारों ने भारतीयों में आत्मसम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय चेतना के विकास को प्रोत्साहित किया।
2. आर्य समाज की शैक्षिक एवं सामाजिक गतिविधियों ने उत्तर भारत में राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित कीं।
3. दयानन्द के आंदोलन का राजनीतिक प्रभाव महत्त्वपूर्ण होने के बावजूद उसकी धार्मिक पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियों ने सामाजिक एवं सामुदायिक संबंधों में कुछ अंतर्विरोध भी उत्पन्न किए।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रमुख कृतियों, आर्य समाज के ऐतिहासिक दस्तावेजों, आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद पर प्रकाशित पुस्तकों तथा प्रासंगिक शोध-पत्रों का अध्ययन किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में सत्यार्थ प्रकाश और दयानन्द के राजनीतिक एवं सामाजिक विचारों से संबंधित लेखन को महत्त्व दिया गया है। द्वितीयक स्रोतों में चार्ल्स एच. हाइम्सैथ, केनेथ डब्ल्यू. जोन्स तथा धनपति पाण्डेय जैसे विद्वानों के अध्ययनों का उपयोग किया गया है। उपलब्ध सामग्री का ऐतिहासिक संदर्भ और विषयवस्तु के आधार पर विश्लेषण करके सामाजिक सुधार, धार्मिक पुनर्जागरण और राजनीतिक चेतना के बीच संबंधों का परीक्षण किया गया है।

साहित्य की समीक्षा

स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज पर उपलब्ध साहित्य में धार्मिक सुधार, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा तथा भारतीय राष्ट्रवाद के विकास को प्रमुख स्थान प्राप्त है। इस विषय के महत्त्वपूर्ण अध्ययनों में **चार्ल्स एच. हाइम्सैथ** की Indian Nationalism and Hindu Social Reform (1964) उल्लेखनीय है। इसमें भारतीय राष्ट्रवाद और सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के बीच संबंधों का अध्ययन किया गया है। लेखक का विश्लेषण यह समझने में सहायक है कि उन्नीसवीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में नए सार्वजनिक विचार-विमर्श और राजनीतिक जागरण के लिए किस प्रकार परिस्थितियाँ निर्मित कीं।

केनेथ डब्ल्यू. जोन्स की Arya Dharm: Hindu Consciousness in 19th-Century Punjab (1976) आर्य समाज के वैचारिक विकास और पंजाब में हिंदू सामाजिक चेतना के निर्माण को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। इस अध्ययन से आर्य समाज की धार्मिक पहचान, सामाजिक गतिविधियों और सामुदायिक चेतना के परस्पर संबंधों का विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। जोन्स का व्यापक शोध आर्य समाज के प्रभाव को केवल सामाजिक सुधार तक सीमित न रखकर उसके राजनीतिक और सामुदायिक परिणामों पर विचार करने का आधार प्रदान करता है।

धनपति पाण्डेय की The Arya Samaj and Indian Nationalism, 1875-1920 (1972) में आर्य समाज और भारतीय राष्ट्रवाद के संबंधों का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। यह पुस्तक आर्य समाज की गतिविधियों, शिक्षा के प्रसार तथा राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े व्यक्तियों और विचारों के बीच संबंधों को समझने में उपयोगी है। वहीं शांता मल्होत्रा की Political Thought of Swami Dayanand (1980) दयानन्द के राजनीतिक विचारों, राज्य संबंधी अवधारणाओं और शासन के सिद्धांतों का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि दयानन्द का योगदान धार्मिक सुधार के अतिरिक्त राजनीतिक चिंतन और सामाजिक पुनर्निर्माण के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण था।

आर्य समाज की राजनीति पर प्रकाशित शोध-पत्रों में The Arya Samaj and Congress Politics in the Punjab, 1894-1908 (1967) विशेष उल्लेखनीय है। इस अध्ययन में पंजाब की राजनीति में आर्य समाज की भूमिका तथा कांग्रेस की राजनीति के साथ उसके संबंधों का परीक्षण किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आर्य समाज का प्रभाव केवल धार्मिक और शैक्षिक संस्थाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसके सदस्य औपनिवेशिक भारत की सार्वजनिक और राजनीतिक गतिविधियों में भी सक्रिय हुए। साथ ही, इस साहित्य में धार्मिक पुनरुत्थान, सामुदायिक पहचान और हिंदू-मुस्लिम संबंधों से जुड़े अंतर्विरोधों पर भी विचार किया गया है।

समग्र रूप से उपलब्ध साहित्य दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रवादी योगदान को समझने के लिए पर्याप्त आधार प्रदान करता है। तथापि, उनके मूल विचारों, आर्य समाज की बाद की गतिविधियों तथा व्यापक भारतीय राजनीतिक चेतना के विकास के बीच स्पष्ट अंतर करते हुए इन सभी आयामों का एकीकृत मूल्यांकन आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन इसी दृष्टि से दयानन्द के सुधार आंदोलन की उपलब्धियों, राजनीतिक प्रभावों और वैचारिक सीमाओं का विश्लेषण करता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन का स्वरूप

स्वामी दयानन्द सरस्वती का सुधार आंदोलन भारतीय समाज को धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों से मुक्त करने के उद्देश्य से विकसित हुआ। उनका मानना था कि धर्म का आधार विवेक, सत्य और नैतिक आचरण होना चाहिए, न कि अंधविश्वास अथवा परंपराओं का अंधानुकरण। उन्होंने वेदों की पुनर्व्याख्या के माध्यम से धार्मिक जीवन में सुधार का प्रयास किया तथा सामाजिक प्रथाओं को तर्क और नैतिकता की कसौटी पर परखने पर बल दिया। वर्ष 1875 में स्थापित आर्य समाज ने इन विचारों को संगठित रूप प्रदान किया। मूर्तिपूजा, कर्मकांड और पुरोहितवादी वर्चस्व की आलोचना के साथ संगठन ने शिक्षा, सामाजिक समानता और नैतिक जीवन को महत्त्व दिया। आर्य समाज की विचारधारा में वेदों की प्रतिष्ठा के साथ समाज को सुधारने तथा भारतीय सांस्कृतिक आत्मविश्वास को पुनर्स्थापित करने की आकांक्षा भी सम्मिलित थी। इस प्रकार धार्मिक सुधार उनके लिए सामाजिक परिवर्तन और सामूहिक जागरण का माध्यम बना :

1. **जातिगत असमानता एवं सामाजिक सुधार -** दयानन्द ने जन्म-आधारित जातिगत श्रेष्ठता और सामाजिक भेदभाव का विरोध करते हुए व्यक्ति के गुण, कर्म और योग्यता को महत्त्व दिया। उन्होंने शिक्षा और धार्मिक ज्ञान तक व्यापक पहुँच का समर्थन किया। उनके विचारों ने उस सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न उठाने

का आधार प्रदान किया जिसमें कुछ समूहों को ज्ञान, सम्मान और अवसरों से वंचित रखा जाता था। राजनीतिक दृष्टि से इस विचारधारा का महत्त्व सामाजिक समानता और नागरिक गरिमा की भावना को प्रोत्साहित करने में था। यद्यपि दयानन्द की वर्ण-व्यवस्था संबंधी व्याख्या आधुनिक जाति-विरोधी विचारधाराओं से पूरी तरह समान नहीं थी, फिर भी जन्म-आधारित सामाजिक विशेषाधिकारों की आलोचना ने सुधारवादी विमर्श को महत्त्वपूर्ण दिशा प्रदान की।

2. **स्त्री-शिक्षा एवं सामाजिक स्थिति में सुधार -** दयानन्द ने स्त्रियों की शिक्षा, सम्मान और सामाजिक स्थिति में सुधार का समर्थन किया। उन्होंने बाल-विवाह जैसी प्रथाओं की आलोचना की और स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखने वाली मान्यताओं को चुनौती दी। आर्य समाज से जुड़े संगठनों ने आगे चलकर स्त्री-शिक्षा तथा शैक्षिक संस्थाओं के विस्तार में योगदान दिया। स्त्री-शिक्षा का राजनीतिक महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि शिक्षा सामाजिक सहभागिता, अधिकारों की समझ और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के अवसर बढ़ाती है। इस प्रकार दयानन्द के सुधारवादी विचारों ने भारतीय समाज में स्त्रियों की भूमिका पर पुनर्विचार को प्रोत्साहित किया, यद्यपि इन विचारों का व्यावहारिक प्रभाव क्षेत्र, वर्ग और संगठन के अनुसार भिन्न रहा।
3. **शिक्षा का प्रसार एवं संस्थागत विकास -** आर्य समाज की दीर्घकालिक उपलब्धियों में शिक्षा का विस्तार प्रमुख रहा। दयानन्द के विचारों से प्रेरित होकर स्थापित दयानन्द एंग्लो-वैदिक (डी.ए.वी.) संस्थाओं तथा गुरुकुल परंपरा से जुड़े संगठनों ने शिक्षा के विभिन्न स्वरूपों को विकसित किया। इन संस्थाओं में आधुनिक विषयों, भारतीय परंपरा और नैतिक शिक्षा के बीच अलग-अलग प्रकार के समन्वय देखने को मिले। शिक्षा के प्रसार ने समाज में नए शिक्षित वर्ग के विकास, सार्वजनिक विमर्श और राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी के लिए आधार प्रदान किया। इस प्रकार आर्य समाज का शैक्षिक योगदान प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन न होते हुए भी राजनीतिक चेतना के निर्माण में सहायक रहा।

भारतीय राजनीतिक चेतना पर सुधार आंदोलन का प्रभाव

1. **राष्ट्रीय आत्मसम्मान एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास -** दयानन्द सरस्वती ने भारतीय समाज को अपनी बौद्धिक और सांस्कृतिक परंपराओं का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया। औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय समाज के बारे में प्रचलित हीनताबोध के विरुद्ध उन्होंने वैदिक साहित्य और भारतीय ज्ञान-परंपरा के महत्त्व को रेखांकित किया। उनकी दृष्टि में समाज की उन्नति के लिए आत्मविश्वास, नैतिक सुधार और ज्ञान का प्रसार आवश्यक था। इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण का राजनीतिक प्रभाव यह हुआ कि भारतीय समाज के कुछ वर्गों में अपनी परंपराओं, भाषा और सामाजिक संस्थाओं के प्रति नए आत्मविश्वास का विकास हुआ। यह भावना आगे चलकर स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और औपनिवेशिक प्रभुत्व की आलोचना जैसे विचारों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में सहायक बनी। हालांकि, सांस्कृतिक आत्मसम्मान और आधुनिक राष्ट्रवाद को एक ही अवधारणा मानना उचित नहीं है; दोनों के बीच संबंध ऐतिहासिक परिस्थितियों और विभिन्न संगठनों की गतिविधियों से विकसित हुआ।
2. **स्वराज एवं स्वशासन की भावना -** दयानन्द सरस्वती के विचारों में स्वशासन और राष्ट्रीय स्वतंत्रता से संबंधित भावनाओं का महत्वपूर्ण स्थान था। उन्होंने शासन को नैतिक उत्तरदायित्व, न्याय और जनकल्याण से जोड़कर देखा। उनकी दृष्टि में राज्य का उद्देश्य केवल सत्ता बनाए रखना नहीं, बल्कि समाज में व्यवस्था, न्याय और नागरिकों के हितों की रक्षा करना भी था। उनकी स्वदेशी तथा स्वशासन संबंधी विचारधारा ने औपनिवेशिक शासन के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। हालांकि, उनके विचारों को बाद के

स्वतंत्रता आंदोलन की पूर्ण विकसित राजनीतिक रणनीति के समान नहीं माना जा सकता, फिर भी उन्होंने ऐसी वैचारिक भूमि तैयार करने में योगदान दिया जिस पर आगे चलकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और स्वशासन के विचार अधिक व्यापक हुए।

3. **राष्ट्रवादी नेतृत्व एवं सार्वजनिक जीवन पर प्रभाव -** आर्य समाज की संस्थागत गतिविधियों ने उत्तर भारत में सार्वजनिक जीवन के विस्तार में योगदान दिया। शिक्षा, सामाजिक सुधार और संगठनात्मक कार्यों के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला। लाला लाजपत राय जैसे राष्ट्रवादी नेता आर्य समाज से प्रभावित थे। उनके राजनीतिक जीवन में सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय शिक्षा और औपनिवेशिक शासन के विरोध का समन्वय दिखाई देता है। आर्य समाज के प्रभाव को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की एकमात्र प्रेरक शक्ति के रूप में देखना उचित नहीं होगा। भारतीय राष्ट्रवाद का विकास अनेक सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक धाराओं के परस्पर संपर्क से हुआ। फिर भी आर्य समाज ने विशेष रूप से उत्तर भारत में राष्ट्रवादी चेतना के कुछ सामाजिक आधारों को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
4. **भाषा, शिक्षा एवं स्वदेशी चेतना -** आर्य समाज से जुड़े अनेक कार्यकर्ताओं ने हिंदी और देवनागरी के प्रचार, शिक्षा के विस्तार तथा स्वदेशी संस्थाओं के विकास को प्रोत्साहित किया। इन गतिविधियों ने सार्वजनिक विमर्श के विस्तार और सामाजिक संगठनों के बीच संपर्क स्थापित करने में योगदान दिया। भाषा के माध्यम से विचारों का प्रसार, शिक्षा के माध्यम से नए नेतृत्व का विकास और स्वदेशी संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक आत्मनिर्भरता की भावना राजनीतिक चेतना के महत्त्वपूर्ण आधार बने। हालांकि, भाषा और धार्मिक पहचान के संबंधों ने कुछ क्षेत्रों में सामुदायिक तनाव भी उत्पन्न किए। इसलिए इस प्रभाव का मूल्यांकन करते समय शिक्षा एवं सार्वजनिक सहभागिता में योगदान के साथ-साथ भाषा और धार्मिक पहचान से जुड़े विवादों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

स्वामी दयानन्द सरस्वती के आंदोलन का मूल्यांकन उसकी उपलब्धियों और सीमाओं, दोनों के आधार पर किया जाना चाहिए। इसकी प्रमुख उपलब्धि यह थी कि उसने धार्मिक परंपराओं की समीक्षा को सामाजिक सुधार, शिक्षा और आत्मसम्मान से जोड़ा। जातिगत विशेषाधिकारों, बाल-विवाह और स्त्रियों की शिक्षा से संबंधित प्रश्नों को सार्वजनिक विमर्श में स्थान देकर इस आंदोलन ने समाज के पुनर्निर्माण की संभावनाएँ विकसित कीं। दूसरी ओर, आर्य समाज की वैदिक पुनरुत्थानवादी विचारधारा ने भारतीय समाज की विविध धार्मिक परंपराओं को समान रूप से स्वीकार करने के प्रश्न पर जटिलताएँ भी उत्पन्न कीं। संगठन की कुछ गतिविधियों, विशेषकर धार्मिक पहचान के आधार पर चलाए गए अभियानों, ने सामुदायिक संबंधों में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया। इतिहासकारों ने आर्य समाज के सामाजिक सुधारवादी योगदान के साथ उसके कुछ राजनीतिक एवं सामुदायिक प्रभावों का भी आलोचनात्मक अध्ययन किया है।

इसके अतिरिक्त, दयानन्द के मूल विचारों और उनके बाद आर्य समाज से जुड़े संगठनों की गतिविधियों के बीच अंतर करना आवश्यक है। किसी संगठन की बाद की राजनीतिक भूमिका को उसके संस्थापक के सभी विचारों का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं माना जा सकता। इसलिए दयानन्द के योगदान को न तो पूर्णतः आधुनिक लोकतांत्रिक विचारधारा के रूप में प्रस्तुत करना उचित है और न ही उसे केवल धार्मिक पुनरुत्थान तक सीमित करना। उनका ऐतिहासिक महत्त्व सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक आत्मसम्मान और राजनीतिक चेतना के बीच संबंध स्थापित करने में निहित है।

शोध-अंतराल

उपलब्ध साहित्य में स्वामी दयानन्द सरस्वती के धार्मिक सुधार, आर्य समाज की शैक्षिक गतिविधियों तथा राष्ट्रवादी आंदोलन में उसके योगदान का अध्ययन किया गया है। तथापि, दयानन्द के मूल विचारों, आर्य समाज की बाद की राजनीतिक गतिविधियों और भारतीय राजनीतिक चेतना के विकास के बीच संबंधों का समेकित आलोचनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम स्पष्ट है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतराल को ध्यान में रखते हुए सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय आत्मसम्मान, स्वशासन तथा धार्मिक पहचान से जुड़े अंतर्विरोधों का संयुक्त मूल्यांकन करता है।

सुझाव

1. दयानन्द सरस्वती के विचारों का अध्ययन सामाजिक सुधार और राजनीतिक चिंतन के परस्पर संबंधों के संदर्भ में किया जाना चाहिए।
2. आर्य समाज के शैक्षिक योगदान को सामाजिक समानता, स्त्री-शिक्षा और सार्वजनिक सहभागिता के परिणामों के आधार पर भी मूल्यांकित किया जाना चाहिए।
3. राष्ट्रीय आंदोलन के अध्ययन में धार्मिक सुधार आंदोलनों के योगदान के साथ उनकी वैचारिक सीमाओं और सामुदायिक प्रभावों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
4. दयानन्द के मूल विचारों और बाद में आर्य समाज से जुड़े संगठनों की राजनीतिक गतिविधियों के बीच स्पष्ट अंतर रखा जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं:

1. दयानन्द सरस्वती के धार्मिक एवं सामाजिक सुधार विचारों ने भारतीय समाज में आत्मसम्मान, शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित किया।
2. आर्य समाज ने शैक्षिक एवं संगठनात्मक गतिविधियों के माध्यम से उत्तर भारत में सामाजिक जागरण और सार्वजनिक सहभागिता के विस्तार में योगदान दिया।
3. स्वदेशी, स्वशासन और सांस्कृतिक आत्मविश्वास से संबंधित विचारों ने राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए अनुकूल वैचारिक परिस्थितियाँ निर्मित कीं।
4. आर्य समाज से जुड़े कुछ नेताओं और संस्थाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, किंतु भारतीय राष्ट्रवाद का विकास अनेक विचारधाराओं और आंदोलनों के सम्मिलित प्रभाव से हुआ।
5. आंदोलन की सामाजिक सुधारवादी उपलब्धियों के साथ धार्मिक पुनरुत्थान और सामुदायिक पहचान से उत्पन्न अंतर्विरोधों को भी स्वीकार करना आवश्यक है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन आधुनिक भारत में सामाजिक जागरण और राजनीतिक चेतना के विकास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी रहा। उन्होंने धार्मिक मान्यताओं की समीक्षा, सामाजिक कुरीतियों के विरोध, शिक्षा के प्रसार और सांस्कृतिक आत्मसम्मान के माध्यम से भारतीय समाज के पुनर्निर्माण का प्रयास किया। वर्ष 1875 में स्थापित आर्य समाज ने उनके विचारों को संस्थागत आधार प्रदान किया और आगे चलकर शिक्षा, सामाजिक सुधार तथा सार्वजनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राजनीतिक दृष्टि से दयानन्द का योगदान इस बात में निहित था कि उन्होंने सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय आत्मविश्वास को एक-दूसरे से जोड़ा। उनके विचारों ने औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारतीय समाज में स्वशासन, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय जागरण से संबंधित विमर्श के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित कीं। आर्य समाज से जुड़े कुछ नेताओं और संस्थाओं ने आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन में भी योगदान दिया। हालांकि, इस आंदोलन

की ऐतिहासिक भूमिका का संतुलित मूल्यांकन उसकी उपलब्धियों के साथ धार्मिक पुनरुत्थान, सामुदायिक पहचान और सामाजिक परिवर्तन से जुड़े अंतर्विरोधों को स्वीकार करने पर निर्भर करता है। निष्कर्षतः, स्वामी दयानन्द सरस्वती को आधुनिक भारतीय राजनीतिक चेतना के उन प्रमुख निर्माताओं में सम्मिलित किया जा सकता है, जिन्होंने सामाजिक और धार्मिक सुधार के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण के वैचारिक आधारों को सुदृढ़ करने में योगदान दिया।

इन निष्कर्षों के आधार पर पहली और दूसरी प्राक्कल्पना को ऐतिहासिक साहित्य से पर्याप्त समर्थन प्राप्त होता है। तीसरी प्राक्कल्पना के संबंध में भी उपलब्ध अध्ययन संकेत देते हैं कि आर्य समाज के सामाजिक सुधारवादी योगदान के साथ कुछ सामुदायिक अंतर्विरोध विकसित हुए। हालांकि, इनके प्रभाव की प्रकृति और सीमा का निर्धारण क्षेत्रीय परिस्थितियों तथा अलग-अलग संगठनों की गतिविधियों को ध्यान में रखकर ही किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दयानन्द सरस्वती, स्वामी, (1875), सत्यार्थ प्रकाश, मूल हिंदी संस्करण।
2. हाइम्सैथ, चार्ल्स एच. (1964), इंडियन नेशनलिज्म एंड हिंदू सोशल रिफॉर्म, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. जोन्स, केनेथ डब्ल्यू. (1976), आर्य धर्म: हिंदू कॉन्शसनेस इन नाइन्टीनथ-सेंचुरी पंजाब, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
4. पाण्डेय, धनपति, (1972), द आर्य समाज एंड इंडियन नेशनलिज्म, 1875-1920, एस. चाँद एंड कंपनी।
5. मल्होत्रा, शांता, (1980), पॉलिटिकल थॉट ऑफ स्वामी दयानन्द, आर्य स्वाध्याय केंद्र।
6. राय, लाला लाजपत, (1915), द आर्य समाज: एन अकाउंट ऑफ इट्स ओरिजिन, डॉक्ट्रिन्स एंड एक्टिविटीज, लॉन्गमैन्स, ग्रीन एंड कंपनी।
7. फार्कुहार, जे. एन. (1915), मॉडर्न रिलीजियस मूवमेंट्स इन इंडिया, मैकमिलन एंड कंपनी।
8. जोन्स, केनेथ डब्ल्यू. (1967), The Arya Samaj and Congress politics in the Punjab, 1894-1908. द जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज़, 26(3), p. 363।
9. भार्गव, वान्या वैदेही, (2025), आर्य समाज, ऑक्सफोर्ड बिब्लियोग्राफीज इन हिंदुइज़्म।
10. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, हिंदू सुधार आंदोलन: उत्तर भारत में आर्य समाज एवं दयानन्द सरस्वती, ई-ज्ञानकोश, अध्ययन सामग्री।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM